पक्षधर

पक्षधर 36

अंक
36
जनवरी–जून, 2024

संस्थापक संपादक : दूधनाथ सिंह

पक्षधर

प्रतिरोध की संस्कृति का रचनात्मक हस्तक्षेप

वर्ष : 18 अंक : 36 जनवरी-जून, 2024

संपादक
विनोद तिवारी

संपादन सहयोग
आशीष मिश्र
सूरज त्रिपाठी

पक्षधरता का संबंध मनुष्य के विश्वबोध और सद-असद् विवेक-बुद्धि अर्थात् अंतरात्मा के विवेक से है।

अक्षर संयोजन

कम्प्यूटेक सिस्टम
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

आवरण : कृतिका सोनी। कृतिका चेल्सी कॉलेज ऑव आर्ट्स, लंदन से टेक्स्टाइल डिजाइन में मास्टर हैं।

मूल्य :

एक प्रति : ₹ 150 (व्यक्तिगत) ₹ 200 (संस्थागत)

सदस्यता :

वार्षिक (व्यक्तिगत) : ₹ 350 (डाक खर्च सहित)
वार्षिक (संस्थागत) : ₹ 400 (डाक खर्च सहित)
पंचवार्षिक : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000
विदेश के लिए : $ 100

भुगतान हेतु बैंक-खाता विवरण :
A/c Name / No. : Pakshdhar / 31266280438
Bank : SBI / IFSC-SBIN0001067

संपादन/प्रकाशन : अवैतनिक/अव्यावसायिक

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक **विनोद तिवारी, सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5, वसुंधरा, गाजियाबाद-201012** के लिए बी.के. ऑफसेट, एफ-93, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032 से प्रकाशित और मुद्रित।

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। संपादक और लेखक की अनुमति के बिना प्रकाशित सामग्री के किसी भी तरह के उपयोग की अनुमति नहीं होगी।

सम्पर्क :

सी-4/604, ऑलिव काउंटी, सेक्टर-5,
वसुंधरा, गाज़ियाबाद-201012
मो. 09560236569
ई-मेल : pakshdharwarta@gmail.com
वेब पता : www.pakshdhar.com

PAKSHDHAR : **ISSN :** 2231-1173
A Bi-Annual Literary Magazine
Editor : Vinod Tiwari
Language : Hindi

अनुक्रम

संपादकीय

दीवारें, घर और दरवाज़ा 5

एक कवि : एक राग

दस कविताएँ : **सविता सिंह** 16

स्त्री होने का वैभव : सविता सिंह की कविताओं पर एक नोट : **अरुण देव** 26

व्याख्यान

संख्या और सत्ता : चुनाव-तंत्र के युग में वैधता के बदलते स्वरूप : **सतीश देशपांडे** 29

विशेष : प्रेमचंद पर एकाग्र

बोल्शेविस्ट प्रेमचंद : **श्रीनारायण पाण्डेय** 39

प्रेमचंद का सामाजिक दर्शन : **रवि श्रीवास्तव** 43

प्रेमचन्द : स्वराज्य, राष्ट्रीयता और आधुनिकता : **राहुल सिंह** 51

कहानियाँ

देव-खेल : **एस.आर. हरनोट** 63

शोक : **कैलाश बनवासी** 82

उस दिन ब्याह था : **अनिल यादव** 91

इत्ता-सा टुकड़ा चाँद का : **उमा शंकर चौधरी** 111

अमर प्रेम : **प्रीति प्रकाश** 130

स्मृति-शेष

चौथीराम यादव : प्रतिरोधी चिंतन परंपरा के प्रतिबद्ध आलोचक : **राम बचन यादव** 140

देशांतर

समरेश बसु 'कालकूट' का रचना वैभव : गंगा से सागर संगम तक : **रणजीत साहा** 146

कविताएँ

चार कविताएँ : **आलोक वर्मा** 160

चार कविताएँ : **ललन चतुर्वेदी** 164

पाँच कविताएँ : **विनय सौरभ** 168

पाँच कविताएँ : **यतीश कुमार** 179

तीन कविताएँ : **गोलेन्द्र पटेल** 184

लंबी कहानी

पोटैशियम सायनाइड : **राजकुमार राकेश** 190

बाहरी दुनिया

स्त्री : परतंत्रता के लिए चिर-अभिशप्त : **नवल-अल-सादवी** *(अनु. सुबोध शुक्ल)* 240

समीक्षाएँ

शब्दों के इकतारे पर उदासी का संगीत : **शीतांशु** 251

'बोरसी भर आँच' से गरमाता, ताज़गी पाता बचपन : **विवेक चतुर्वेदी** 258

जो नहीं सुन रहे हैं एक दिन उन्हें भी सुनना पड़ेगा : **सुशील सुमन** 262

कविता के कैनवास पर देश का मौजूदा नक़्शा : **श्रीकृष्ण नीरज** 270

तुमुल कोलाहल और अंधकार के बीच 'शान्ति पर्व' : **चाहत अन्वी** 274

दीवारें, घर और दरवाज़ा

दिल्ली का मावलंकर भवन। तारीख़ 1 नवंबर 2015। अवसर था असहिष्णुता, लिंचिंग और सामाजिक विद्वेष के विरोध और अभिव्यक्ति की आज़ादी के समर्थन में आयोजित 'प्रतिरोध' सभा का। कवि अशोक वाजपेयी इसके संयोजक थे। मावलंकर भवन का सभागार खचाखच भरा हुआ था। पीछे लोग खड़े भी थे। मंच सज चुका था। सब लोग आ चुके थे। इंतज़ार था बस कृष्णा सोबती का। थोड़ी देर में व्हील चेयर पर कृष्णा जी सभागार में दाख़िल हुईं। कृष्णा जी ने एक लिखित पर्चा तैयार किया था। बाद में यह पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ। कृष्णा जी ने जब अपना लिखित वक्तव्य समाप्त किया तो पूरा सभागार उनके सम्मान और वक्तव्य के समर्थन में उठ खड़ा हुआ। देर तक तालियाँ बजती रहीं। बंद होने के बाद भी उन तालियों की अनुगूँज देर तक बनी रही। हिन्दी के किसी लेखक के प्रति यह सम्मान, उसकी आवाज़ के समर्थन में इतने लोगों का एकसाथ खड़ा होना, इसके पहले मैंने नहीं देखा। मैं रोमांच से भर गया था, यह देखकर कि अगर आपकी कलम टुटपुँजिए लोभ-लाभ की स्याही से मुक्त है, आपकी आवाज़ में निडरता है, वह निष्कंप है, तो उसे लोगों का सम्मान और आदर ज़रूर मिलेगा। उक्त वक्तव्य का यह अंश, आज भी कृष्णा जी के एक लेखक होने से पहले उनके नागरिक, नागरिक अधिकार और उसकी स्वतंत्रता की परख कराता है—"कोई भी कट्टरपंथी विचारधारा अगर राष्ट्रीय अनुशासन के नाम पर नागरिक की व्यक्तिगत रुचि-वृत्ति पर अपनी संकीर्ण, कट्टर, अलगाववादी संहिता थोपने का प्रयत्न करेगी तो यक़ीनन जन-मानस उसका प्रतिरोध करेगा। आख़िर कोई भी राजनीतिक दल अपने को भारतीय संस्कृति का अलंबरदार क्यों समझ बैठे। वह किसी राजनीतिक दल की पूँजी नहीं। राष्ट्र की संस्कृति किसी भी राजनीतिक दल की बपौती नहीं। वह नागरिक समाज की थाती है। यह विरासत उन्हीं से उपजी है और उन्हीं में प्रवाहित होती है।"